IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

आधुनिक अवधी काव्य में सामाजिक अवधारणा

डॉ0 मनोज कुमार
असिस्टेन्ट प्रोफेसर–हिन्दी विभाग
नव–युग पी0जी0 कालेज,
रतनपुरबारी सहिजन
जनपद–सुल्तानपुर

आधुनिक अवधी कवियों के काव्य में सामाजिक अवधारणा का बहुविध चित्रण हुआ है। कहीं पर भूख से बिलबिलाते गरीब–किसानो –मजदूरो के बच्चे मिलते है, तो कही गाँव के जमीदारो के अत्याचार से पीड़ित लोग। जीवन के सुख–दुःख, आशा–निराशा, हर्ष–विषाद आदि जीवन के बहुविध रूप को अपने काव्य के माध्यम से प्रस्तुत कर अपनी अभिव्यक्ति प्रदान करता है। ऐसी रचनाओं में स्वार्गिक या काल्पनिक अंशो को सम्मिलित कर इस धरती पर घटित सत्य या यथार्थ घटनाओं काही प्रस्तुती करण किया जाता है। ''यथार्थ चेतना से मण्डित कलाकार मानता है कि समाज में जो बुरा है, घृणित है, हीन है, उसे साहित्य में स्थान मिलना ही चाहिए, क्योंकि सत–सुन्दर एवं उत्तम केवल कल्पना की वस्तुएँ है।''

व्यक्ति के व्यक्तित्व का विकास समाज में ही होता है। कोई भी व्यक्ति समाज में रहकर उसके उत्थान, पतन, रीति रिवाज, परम्परा, धर्म, दर्शन, शिक्षा, संस्कार आदि पर सामान्य दृष्टिपात कर जीवन जीता जाता है, वह उनमें लिप्त नहीं होता बल्कि उसे सहन रूप में लेकर आगे बढ़ जाता है, उन्ही व्यक्तियों में कोई एक ऐसा भी व्यक्ति होता है जो विशेष रूप से समान के क्रिया–व्यापारों पर दृष्टिपात करता है, तथा रूग्ण हुई परम्पराओं, रीति–रिवाजों, क्षरित मूल्यों तथा समान के विघटनकारी तत्वों का विरोध करता है। वह समाज के यथार्थ को देखता तथा उसके

आदर्शात्मक रूप की कल्पना करता है। जिसे कवि या साहित्यकार की संज्ञा दी जाती है।

डॉ0 रमेश देश मुख ने लिखा है कि ''मनुष्य जिस समान में रहता है, उसके प्रभाव से बच नहीं सकता। उसका मूल्य चिन्तन सामाजिक व्यवस्था के प्रभाव को अन्तर्मुक्त कर लेता है। मनुष्य सामाजिक प्राणी है। इसी कारण वह समाज तथा परिवार से मूल्य ग्रहण करता है। इतना ही नहीं, वह स्थान प्रदेश राष्ट्र तथा विश्व से भी मूल्यों को अपनाता है। इस मूल्य–ग्रहण से उसकी मान्यताओं में भी परिर्वतन होने लगता है।''[1] वास्तव में सामाजिक मूल्य मानव–जीवन के विविध पक्षों से जुड़े है। समाज में रहने के कारण मानव को उन सामाजिक मूल्यों का पालन करना पड़ता है। इस तरह मानव एवं समान का अभिन्न सम्बन्ध होता है। कवि

एवं साहित्यकार भी समाज का अंग होता है। समाज में रहकर ही वह अपने समस्त क्रिया व्यापारों को सम्पन्न करता है।

डॉ0 त्रिभुवन सिंह का कथन उल्लेखनीय है–''काव्य मानव से सम्बंधित होने के कारण मानव मानस की विशिष्ट एवं रमणीय अनुभूति है। साहित्य का पहला अंग भाव जिसके लिए कल्पना का योगदान अपेक्षित है, परन्तु कल्पना ऐसी जो अनुभूति के आधार पर निर्मित हो।''[2]

आधुनिक अवधी कवियों ने समाज को एक दृष्टा बनकर देखा और अपने काव्य में उसी रूप की सृष्टि की। आधुनिक अवधी कवि में अधिकांश गांव के रहने वाले हैं। गांव की जिन्दगी ग्राम्य समाज में उन्होंने निरन्तर अधिक से अधिक सम्पृक्त रहने प्रयत्न किया। इस तरह आधुनिक अवधी काव्य अपने आप में युग–बोध का संवाहक है। इन अवधी कवियों ने अपने समय के समाज को विधिवत देखा परखा तथा समाज में रहकर किसानों

मजदूरों के दुःख दर्द को बखूबी अनुभव किया। आधुनिक अवधी काव्य में उसके रचनाकारों के साथ यथार्थत्मक एव आदर्शात्मक दृष्टि का सन्निवेश हुआ है। ग्राम्य समाज का बखूबी अंकन हुआ है। इस तरह कहा जा सकता है कि आधुनिक अवधी कवियों एवं ग्राम्य समाज का अन्योन्याश्रित सम्बन्ध हैं और वैसे भी कवि समाज में रहकर अपनी रचना को आकार देता है। समाज के विविध क्षेत्रों से ही वह वर्ण्य–विषय का चयन करता है। जैसा कि हरि प्रसाद मिश्र ने भी लिखा है कि–''मनुष्य का मन इस प्रकार बना है कि वह प्रत्येक अनुभूति को आकार में व्यवस्थित करना चाहता है और आकृति की अपूर्णता को कल्पना के बल से पूर्ण करने के लिए प्रवृत्त होता है। प्रत्येक आकृति किसी पृष्ठभूमि से उभरती है। वह भूमि और भावबीज मिलकर कल्पना में नृत्य करते है, तब आकृति निखर उठती है।''[3] उदाहरणार्थ पंक्तियॉ प्रस्तुत है, जिसे समाज के सम्बन्धों को देखा जा सकता है।

जहॉ हाथ माँ लिहे पहररूआ कूटै धान बहुरिया।
झनन झनन झन करै कंगनवा रहि रहि वाजै चुरिया।
करिहइयॉ पै धरै गगरिया कान्हे पै उवहनियाँ।
जहां दांत से घूँघट दाबै चलै लजाधुर धनिया।।
छॉहें माँ हरवाह उखड़ि के जहॉ चबाये चबैना।
बरधा पागुर करैं मुँहे से झरे दूध एस फेना।।4

उपर्युक्त पंक्तियों के माध्यम से कवि ने गांव का दृष्यांकन किया है। गांव के लोगों के क्रिया व्यापारों को वर्ण्य–विषय के रूप में स्वीकार किया है। ठीक इसी भॉति गांव के किसानों–मजदूरों के प्रति अवधी कवि विशेष रूप से सजग रहे है। दीन–हीन साधन विहीन किसान की व्यथा के प्रति

उनकी गहरी संवेदना थी। यही कारण है कि वे सीधे–सपाट ढंग से किसानों की व्यथा को व्यंजित कर सके है। इससे आधुनिक कवियों एवं ग्राम्य समाज के परस्पर निकटस्थ सम्बन्धों का आंकलन किया जा रहा है यथा–

लरिका मरै अन्न विना घर माँ,

हमहूँ हियॉ घास बेगारि माँ छोली।

मांदी परी घरवाली कुवार से,

लाई कहॉ से दवाई की गोली।

गौनु बिटेवा का देबै ना तौ,

बोलिहैं सब टोला–परोस के बोली।

सोच यहै दिन–राति रहै,

अब नीकि न लागै दिवारी औ होली।[5]

डॉ0 राजनाथ शर्मा ने लिखा है कि–''कवि वास्तव में समाज की व्यवस्था, वातावरण धर्म–कर्म, रीति–नीति तथा सामाजिक शिष्टाचार या लोक व्यवहार से ही अपने काव्य का उपकरण चुनता है और समाज का प्रतिनिधित्व करता है, जिसमें वह जन्म लेता है। वह अपनी समस्याओं का सुलझाव, अपने आदर्श की स्थापना अपने समाज के आदर्शो के अनुरूप ही करता है। जिस सामाजिक वातावरण में उसका जन्म होता है। उसी में उसका शारीरिक, बौद्विक और मानसिक विकास भी होता है।'' इस प्रकार साहित्यकार या कवि जिस समान का अंग होता है उसी समान का ही चित्रण करता है। यह दूसरी बात है कि इस चित्रण में समाज के सुधार की भावना से प्रेरित होकर एक आदर्श की स्थापना करता है, या उसका यथातथ्य चित्रणकर केवल एक संकेत दे, दूर हट जाता है, जिससे समाज

उस चित्रण पर मनन करने के लिए विवश हो जाये। ऐसे कवि या साहित्यकार युग–युग तक समादृत होते हैं।

प्रसिद्ध समाजशास्त्री जी0के0 अग्रवाल ने लिखा है कि–''मानव समाज की सुदीर्घ इतिहास इस बात का साक्षी रहा है कि मानव समाज में सामाजिक असमानता प्रारम्भ से ही विद्यमान रही है। समाज के अस्तित्व के साथ समाजो में मुखिया की प्रभुता, व्यक्तिगत शक्ति और पारिवारिक सम्पत्ति के आधार पर ऊँच–नीच का भेद भाव सदैव बना रहा है।''[6] समाजिक असमानता को यदि सकारात्मक दृष्टि से देखा जाय तो वह समाज के विकास का एक महत्वपूर्ण तथ्य है। लेकिन नकारात्मक दृष्टि से देखा जाय तो यह एक सीमा के उपरान्त समाज के घृणित स्वरूप को सामने लाता है, जिसका दुष्प्रभाव मध्य एवं निम्न वर्गीय परिवारों पर पड़ता है।

वर्तमान सामाजिक व्यवस्था ने जनसामान्य को अधोपतन की ओर ढकेल दिया है। प्रत्येक व्यक्ति वैयक्तिक एवं सामाजिक स्तर पर अपनी नैतिकता खो चुका है। अपने विचारों से गिर चुका है। आन नैतिक मूल्यों का इस तरह ह्रास हुआ है कि लोग कल–बल–छल से मात्र अपने स्वार्थ–सिद्वि में ही लगे हुए है, उन्हें किसी दूसरे के हित की चिन्ता नहीं है। जैसा कि आचार्य विश्वनाथ पाठक ने अपनी कृति सर्वमंगला में लिखा भी है कि आज कम पढ़ा–लिखा, प्रतिभाहीन व्यक्ति सुविधा शुल्क देकर उच्च पदों पर आसीन है। वे समाज से अधिकृत व्यक्ति है। सामाजिक संकीर्णता का इससे अच्छा उदाहरण और क्या हो सकता है।

सासन करैं देस पै दुरजन,
सज्जन बीनैं कण्डा।
जे नियाव कै बाति उठावै,
वह पै बरसे डण्डा।।[7]

आचर्य विश्वनाथ पाठक जी ने अन्यत्र लिखा है कि–

घुसहा भमे करमचारी सब,
बेतन हवइयै घाला।
दिया बारि कै सबकॉ मूसै,
मारि मुँहे पै ताला।।

सत्य फूल गूलरि कै ह्वइगा,
उठा धरम कै डेरा।
त्याग तपिस्या गली गली मॉ,
हेरत फिरै बसेरा।।[8]

उपर्युक्त विवरण के आधार पर स्पष्ट कहा जा सकता है कि आधुनिक अवधी कवियों का मानना है कि मानव मूल्यों के निरन्तर ह्रास से ही सामाजिक अव्यवस्था पैदा हो गयी है। सामाजिक अव्यवस्था के कारण ही समाज में शोषक एवं शोषित दो वर्ग हुए। शोषकों के मन में मानव मूल्यों के प्रति सम्मान–भाव भी नहीं है, फलतः वे नैतिकता से हटकर सर्वहारा वर्ग का शोषण किया करते है। मानव–मूल्यों के पुनर्स्थापन से ही समाजवाद की प्रतिष्ठा होगी। लोग एक दूसरे का सम्मान करेंगे, कोई किसी से छोटा–बड़ा नहीं होगा। सबको समान अधिकार प्राप्त होगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ–

1. डॉ0 रमेश देशमुख–आठवें दशक की हिन्दी कहानी में जीवन–मूल्य, पृष्ठ–72
2. डॉ0 त्रिभुवन सिंह–हिन्दी उपन्यास एवं यर्थाथवाद, पृष्ठ–31
3. हरि प्रसाद मिश्र–आलोक–शिखा, पृष्ठ–8
4. अवधी कविता के हीरक हस्ताक्षर, पृष्ठ–275
5. अवधी कविता के हीरक हस्ताक्षर पृष्ठ–260
6. जी0के0 अग्रवाल–मानव समाज, पृष्ठ–247
7. आचार्य विश्वनाथ पाठक कृति 'सर्वमंगला, पृष्ठ–158
8. सर्वमंगला, पृष्ठ–156